सीताकांत महापात्र

सीताकांत महापात्र का जन्म 17 सितंबर 1937 ई० को उड़ीसा में हुआ । 1957 ई० में उत्कल विश्वविद्यालय से इन्होंने बी० ए० किया । एम० ए० इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1959 ई० में राजनीति विज्ञान विषय से किया । सीताकांत महापात्र एक जाने-माने उड़िया कवि और आलोचक हैं, जिन्होंने उड़िया परंपरा के आचार-विचार को बखूबी चित्रित किया है । वे भारतीय साहित्य में अपनी एक अलग पहचान रखते हैं । उनकी कविताओं में उड़ीसा का जीवन, वहाँ का भूगोल गहरी संवेदना और आस्था के साथ प्रकट हुआ है । उनकी नजर में उड़ीसा के लोग दयालु, साधारण और निर्दोष हैं । उन्होंने वहाँ के आदिवासी समाज को भी अपने साहित्य का विषय बनाया है । आदिवासी समाज की गरीबी, परंपरा और सांस्कृतिक बोध उनके साहित्य में गहरी सहानुभूति के साथ उपस्थित हुआ है ।

सीताकांत महापात्र साहित्यकार तो थे ही साथ ही वे एक सफल प्रशासक के रूप में भी खूब चर्चित हुए । वे 1961 बैच के आई० ए० एस० थे । उन्होंने आई० ए० एस० की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था । उन्होंने कई प्रतिष्ठित पदों को सुशोभित किया है । वे भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय में सचिव तथा नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली के अध्यक्ष भी थे ।

उनके 'अष्टपदी', 'समुद्र' आदि अनेक कविता संकलन, अनेक निबंध संकलन और यात्रा वृत्तांत प्रकाशित हैं । उन्होंने अंग्रेजी में भी रचनाएँ कीं - 'द रूडन्ट टेंपल एंड अदर पोएम्स' (1996) ।

उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिनमें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' (1993), 'सरला पुरस्कार' (1985), 'उड़ीसा साहित्य अकादमी पुरस्कार' (1971), 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' (1984), 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' (1983) प्रमुख हैं ।

'समुद्र' कविता में समुद्र का चरित्र प्रकट किया गया है । समुद्र यहाँ समाज का प्रतीक भी कहा जा सकता है । समुद्र जो प्रकृति का एक प्रमुख हिस्सा है, मनुष्य को सबकुछ देना चाहता है क्योंकि वह अक्षय है और मनुष्य की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति को जानता है । यह कविता आज की उपभोक्तावादी संस्कृति की तीखी आलोचना करती है ।

समुद्र

समुद्र का कुछ भी नहीं होता ।
मानो अपनी अबूझ भाषा में
कहता रहता है
जो भी ले जाना हो ले जाओ
जितना चाहो ले जाओ
फिर भी रहेगी बची देने की अभिलाषा ।

क्या चाहते हो ले जाना, घोंघे ?
क्या बनाओगे ले जाकर ?
कमीज के बटन ?
नाड़ा काटने के औजार ?
टेबुल पर यादगार ?
किंतु मेरी रेत पर जिस तरह दिखते हैं
उस तरह कभी नहीं दिखेंगे ।

या खेलकूद में मस्त केंकड़े ?
यदि धर भी लिया उन्हें
तो उनकी आवश्यकतानुसार
नन्हे-नन्हे सहस्र गड्ढों के लिए
भला इतनी पृथ्वी पाओगे कहाँ ?

या चाहते हो फोटो ?
वह तो चाहे जितना खींच लो
तुम्हारे टीवी के बगल में
सोता रहूँगा छोटे-से फ्रेम में बँधा
गर्जन-तर्जन, मेरा नाच गीत, उद्वेलन
कुछ भी नहीं होगा ।

जो ले जाना हो ले जाओ, जी भर
कुछ भी खत्म नहीं होगा मेरा
चिर-तृषित सूर्य लगातार
पीते जा रहे हैं मेरी ही छाती से
फिर भी तो मैं नहीं सूखा ।

और जो दे जाओगे, दे जाओ खुशी-खुशी
पर दोगे भी क्या
सिवा अस्थिर पदचिह्नों के
एक-दो दिनों की रिहायश के बाद
सिवा आतुर वापसी के ?

उन पदचिह्नों को
लीप-पोंछकर मिटाना ही तो है काम मेरा
तुम्हारी आतुर वापसी को
अपने स्वभाव सुलभ
अस्थिर आलोड़न में
मिला लेना ही तो है काम मेरा ।

अभ्यास

कविता के साथ

1. समुद्र 'अबूझ भाषा' में क्या कहता रहता है ?
2. समुद्र में देने का भाव प्रबल है । कवि समुद्र के माध्यम से क्या कहना चाहता है ?
3. निम्नांकित पंक्तियों का भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें –

   ''सोता रहूँगा छोटे से फ्रेम में बँधा
   गर्जन तर्जन, मेरा नाच गीत उद्वेलन
   कुछ भी नहीं होगा ।''
4. 'नन्हे-नन्हे सहस्र गड्ढों के लिए / भला इतनी पृथ्वी पाओगे कहाँ' से कवि का क्या अभिप्राय है ?
5. कविता में 'चिर तृषित' कौन है ?
6. सप्रसंग व्याख्या करें –

   (क) उन पदचिह्नों को,
   लीप-पोछकर मिटाना ही तो है काम मेरा
   तुम्हारी आतुर वापसी को
   अपने स्वभाव सुलभ
   अस्थिर आलोड़न में
   मिला लेना ही तो है काम मेरा

   (ख) क्या चाहते हो ले जाना घोंघे ?
   क्या बनाओगे ले जाकर ?
   कमीज के बटन
   नाड़ा काटने के औजार
7. समुद्र मनुष्य से प्रश्न करता है । इस तरह के प्रश्न के पीछे मनुष्य की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति का पता चलता है । आप इससे कहाँ तक सहमत हैं । इस पर अपने विचार प्रकट करें ।
8. कविता के अनुसार मनुष्य और समुद्र की प्रकृति में क्या अंतर है ?
9. कविता के माध्यम से आपको क्या संदेश मिला ?
10. 'किंतु मेरी रेत पर जिस तरह दिखते हैं / उस तरह कभी नहीं दिखेंगे' पंक्तियों के माध्यम से कवि का क्या आशय है ?
11. 'जितना चाहो ले जाओ / फिर भी रहेगी बची देने की अभिलाषा' से क्या अभिप्राय है ?
12. इस कविता के माध्यम से समुद्र के बारे में क्या जानकारी मिलती है ?

कविता के आस-पास

1. मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है । इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?
2. उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने मनुष्य की प्रकृति को स्वार्थी बना दिया है । इस आधार पर एक निबंध लिखें ।
3. पुराणों में कथा है समुद्र से चौदह रत्न निकले थे । वहाँ भी समुद्र ने दिया था । आज के युग में समुद्र से क्या-क्या प्राप्त होता है । इसकी एक सूची बनाएँ ।
4. सीताकांत महापात्र उड़िया के कवि हैं जिन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था । ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले हिंदी के लेखकों की सूची बनाएँ जिसमें रचना और वर्ष का भी उल्लेख हो ।
5. हिंदी पाठक को समुद्र का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है, फिर भी हिंदी के कुछ कवियों ने समुद्र का प्रत्यक्ष चित्रण करनेवाली कविताएँ लिखी हैं । उनके बारे में मालूम करें ।

भाषा की बात

1. निम्नांकित शब्दों से संज्ञा तथा सर्वनाम को अलग-अलग करें –
   समुद्र, कुछ, टेबुल, अपने, फोटो, तुम्हारे, वह, घोंघे
2. निम्नांकित शब्दों से दो-दो पर्यायवाची शब्द बनाएँ –
   समुद्र, अभिलाषा, पृथ्वी, सूर्य
3. निम्नांकित शब्दों से समास बनाएँ –
   अस्थिर, पदचिह्न, आवश्यकतानुसार
4. कविता से विदेशज शब्द चुनें ।
5. पठित कविता से क्रिया पद को चुनें ।
6. निम्नलिखित रेखांकित कारक चिह्नों को पहचानें –
   (क) कमीजों **के** बटन
   (ख) टेबुल **पर** यादगार
   (ग) खेलकूद **में** मस्त केंकड़े
   (घ) नन्हे-नन्हे सहस्र गड्ढों **के लिए**
   (ङ) उन पद चिह्नों **को**

शब्द निधि

अबूझ	:	जो समझ में या पहचान में न आए
अभिलाषा	:	इच्छा, आकांक्षा
रेत	:	बालू
उद्वेलन	:	व्याकुलता
वर्जन	:	निषेध
तृषित	:	पिपासित, प्यासा
रिहायश	:	निवास स्थान
आलोड़न	:	भीतर ही भीतर उमड़ना-घुमड़ना
आतुर	:	उत्सुक